अंतरा-शब्दशक्ति

जीवन के रंग दोहों के संग

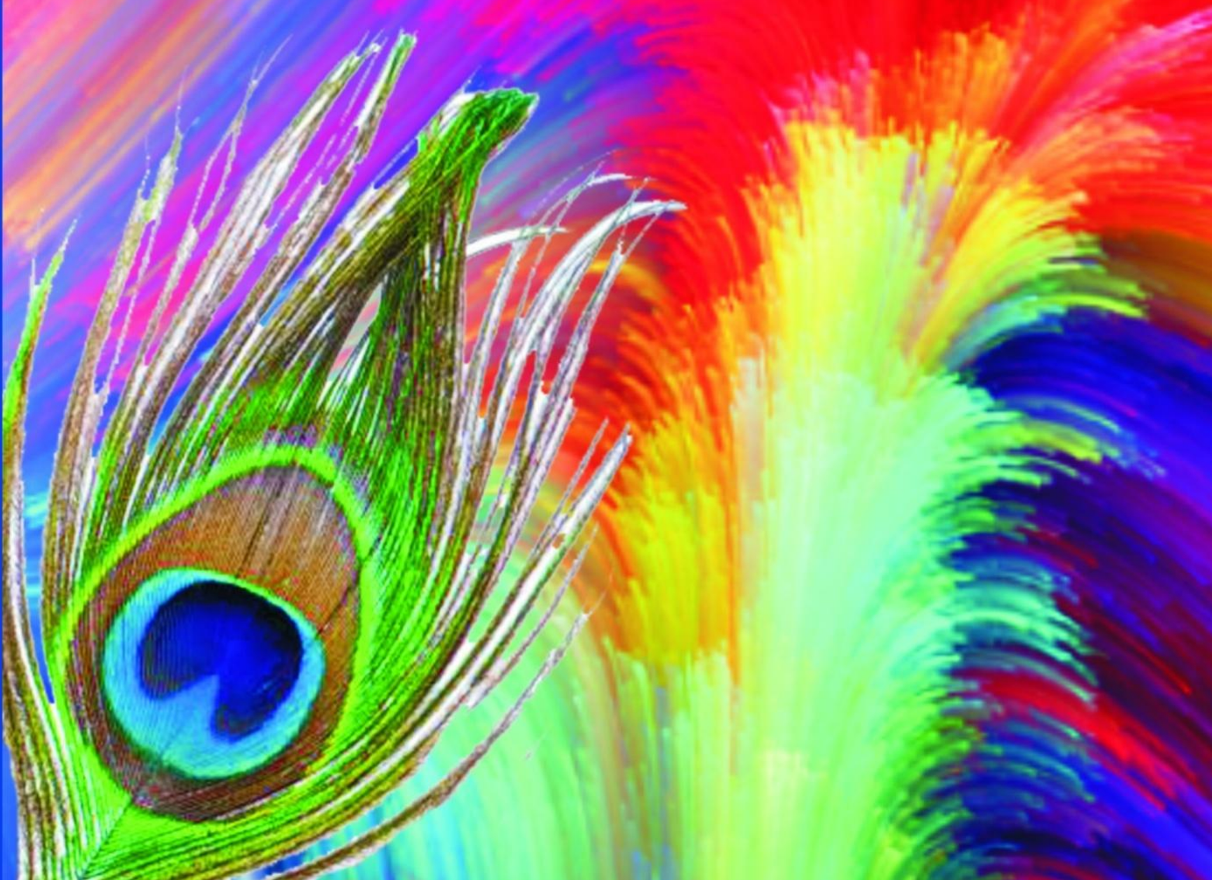

दोहा संग्रह

अनिता मंदिलवार ''सपना''

जीवन के रंग, दोहो के संग

(दोहा संग्रह)

अनीता मंदिलवार 'सपना'

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-37-7

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © अनीता मंदिलवार 'सपना'

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Jeevan Ke rang, Doho ke sang' by "Anita Mandilwar 'sapana"

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

लेखक की कलम से,....

मेरे दोहों का संकलन "**जीवन के रंग- दोहो के संग**" आपके हाथों में है। प्रस्तुत दोहे मेरी साहित्य साधना की फल श्रुति है । दोहों के माध्यम से अपने अंतर्मन की बात, समाज की दशा का वर्णन को दर्शाने की एक कोशिश भर है।

सर्वप्रथम दोहा गणेश जी को अर्पित और कुछ दोहे माँ शारदे को समर्पित है। इस दोहा संग्रह में कई विषयों को लेकर लिखने की कोशिश की है। कान्हा की यशोदा माँ से हँसी ठिठोली, हिन्दी भाषा के लिए अलख जगाने से लेकर माँ भारती को नमन, जीवन के सतरंगी सपनों के संग प्रेम, द्वेष, वसंत, श्रृंगार,साहित्य, सौन्दर्य, सत्कर्म, आचरण जैसे समसामयिक विषयों पर लेखन किया है मैंने । एक बात, मेरे निकट का कोई भी शब्द मेरी सभहज अभिव्यक्ति का माध्यम है।

मैं गद्य और पद्य में करीब 25 वर्षों से लिख रही हूँ, पर छंदों का ज्ञान, दोहों में गेयता और लय की समझ, कलम की सुगंध छंदशाला से सीख पायी, विशेषकर आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी, आ. अतुल यादव जी, भाई आदर्श सिंह निखिलजी और आ. महातम मिश्रा गौतम जी की आभारी हूँ जिनका भरपूर सहयोग हमें मिला ।

इस संग्रह को प्रकाशित करने में आ. प्रीति सुराना जी और आ. शिखा जैन जी के अतुलनीय योगदान के लिए ह्रदय से आभारी हूँ ।

अंत में एक निवेदन, मेरे इस दोहा संग्रह "**जीवन के रंग- दोहो के संग**" के संबंध में आपकी राय, आपकी समीक्षा का स्वागत है ।

अनिता मंदिलवार सपना

अंबिकापुर सरगुजा छतीसगढ़

"जीवन के रंग- दोहो के संग"

(दोहा शतक)

अभिनंदन है आपका, गणपति अरज हमार ।
स्वीकारो प्रभु अरज मम, नमन करूँ प्रतिवार।01।

विद्या वारिधि शारदे, दे दो विद्या दान ।
ज्ञान भरो उर आज माँ, मिटें सारे अज्ञान ।02।

सिर पर माँ का हाथ हो, पुत्र नवाये शीश ।
मात-पिता की छाँव हो, पुत्र बने बागीश ।03।

झर झर बहता ही रहे, इन नयनों से नीर ।
सबको तो अपनी पड़ी, कौन बँटाये पीर ।04।

तेरी मुरली मोहना, मन को भली सुहाय।
घर-आँगन अब सब जगह, तेरी तान सुनाय ।05।

हिन्दी भाषा हिन्द की, इसे अमल में लाय।
जन-जन तक पहुँचा इसे,अलख जगाया जाय ।06।

जीवन ये अनमोल है, तोल-तोल के बोल।
झूठ सत्य के मध्य में, बजें पिटेंगे ढोल।07।

भावुक मेरा मन हुआ, सुनकर उनका हाल ।
उनका रोना देखकर, अपना मन बेहाल ।08।

सपना मन लालच भरा,समझ नाहिं कछु पाय।
प्रभु सुमिरन ही सार है, अब समझाया जाय ।09।

सपना मन का रंग तो, पल-पल बदलत जाय।
राम- रंग में म रँगा, गुरु-पद माथ नवाय ।10।

समय समय का मोल है, सपना समझ न आय ।
दिन रहते कब एक से, मानुष समझ न नाय ।11।

सम को सम कहते सभी, विषम न जाने कोय ।
सम-विषम मध्य में कहाँ, लाभ बता दो होय ।12।

सपना मीठा स्वर- सदा, गाकर तान सुनाय ।
छंद जड़ाऊ मन बसे, सुनकर सब को भाय ।13।

जगत दीप 'सपना' बनो, कर लो ऐसा काज ।
दूर हटेगा फिर तिमिर, बचे ज्ञान की लाज ।14।

सपना इच्छा हरि मिलन, पूरी हो किस रोज ।
दिखलाओ हे प्रभु दरस, बहुत हुई अब खोज ।15।

सपना खुश होगी बहुत, मिलकर प्रिय से आज ।
खुश होगी उस फेर में, सुन उनकी आवाज ।16।

बोझ हृदय 'सपना' लिए, खड़ी द्वार पर आय ।
कब आओगे मोहना, शान तुम्हारी भाय ।17।

सुख दुख जग का है नियम, अब कुछ किया न जाय ।
खुश रहकर पल लो बिता, जिया खुशी से जाय ।18।

सपना द्वेष न खार मन, उपजे प्रेम विचार ।
प्रेम- प्रेम में हो विजय, प्रेम चुने जब हार ।19।

भाव सदा ही जागते, उठती लहर हजार ।
आज उजाला ही मिले, सपना तम के पार ।20।

काजल लागे न सुरमा, नयन बन्द हो जाय ।
नैनों में हैं श्याम जब, दूजा कौन समाय ।21।

प्रेम बिना खग तुल्य नर, कुछ भी समझ न पाय ।
प्रेम बिना सपना कहे, जीते जी मर जाय ।22।

सपना जी ले आज में, जानें कल क्या होय ।
कल की चिंता छोड़ दे, जाने न इसे कोय ।23।

सोच समझ के हों करम, हित सबका ही मान।
बिन सोचे जो मूढ़ वो, सदा सहे अपमान ।24।

सपना सपना देखती, सपने कब सच होय।
बंद पलक में सच लगें, खुली पलक में रोय ।25।

फूल कभी कजरा बने , कभी गले का हार।
बन टीका मस्तक लगे, गौरी का श्रृंगार ।26।

सपना मन में प्रेम है, मिलने की है आस ।
लगन लगी अब प्रेम की, हिय कान्हा का वास ।27।

हूक उठी सपना भली, हर की याद दिलाय ।
पल पल मन सुमरन करे, आँखे भर- भर आय ।28।

अनमोल बोल हैं बहुत, सोच समझकर बोल।
सपना मन की बात है, तुला मानकर तोल ।29।

जीवन को जी भर जियो,हाथों में ले हाथ।
सपना वादा दो निभा ,देकर उनका साथ ।30।

वर्ण वर्ण दोहा बने, शब्द-शब्द मिल गीत।
बने प्रीत को यूँ सजन , अगर बनाओ मीत ।31।

सपना ने सब कह दिया, बाकी कहा न जाय।
रास रचाये कृष्ण तो, फिर कछु रास न आय ।32।

बासंती परिधान में , हो वसंत श्रृंगार ।
आम्र वृक्ष पर पुष्प लगे, भौरों का गुंजार ।33।

पहलू जीवन-मृत्यु दो, दोनों बड़े कमाल।
दोनों ही विपरीत है, चले समय की चाल ।34।

जीवन अविरल सम नदी, सागर सा विस्तार ।
सुख- दुख जैसे धार दो, और फूल सँग खार ।35।

चादर उतनी तानिये , जीवन जाये बीत ।
सबका तुम सोचो भला, सीखो ऐसी रीत ।36।

सेवा हो साहित्य की , सपना लिया बनाय ।
जीवन बस कविता सृजन, दूजा कछु न सुहाय ।37।

बासंती परिधान में , सौंदर्य मन मोर।
छुप छुप सपना देखती, कान्हा है चितचोर ।38।

करिये कुछ ऐसे करम, बन जाये इतिहास ।
सोच समझकर बोलिए, मत करिए परिहास ।39।

अध्ययन पठन नियम जतन, करते हम सरकार ।
नित प्रति के अभ्यास से, हो स्वप्निल विस्तार ।40।

सपना बस सत्कर्म ही, जीवन का है सार ।
जीत मिले सत्कर्म को, कभी न होगी हार ।41।

मन रखना निश्छल सरल, नहीं करो अवसाद ।
जैसा होगा आचरण, वैसा ही प्रतिसाद ।42।

नयन -नयन की बात में , आमंत्रण दे आप।
मन की मन से पढ़ गए, मन की मन पर छाप ।43।

सपना अच्छी सोच ही, जीवन का आधार ।
नित देखें सबकी खुशी, बगिया बीच बहार ।44।

सपना स्वर विहंगम-मृदु, गाकर तान सुनाय ।
छंद बिखेरे जब कलम, सुनकर मन को भाय ।45।

अलग-अलग हैं रात-दिन, मिलन न होने पाय ।
एक प्रकाश तिमिर बने, साथ नहीं निभ पाय ।46।

मिले प्रीत में यूँ सजन, मधुर -मधुर मुस्काय ।
आ जाओ अब मोहना, मन पुलकित हो जाय ।47।

सपना मन उजला हुआ, शबनम मोती रूप ।
बिखर गई ऐसे किरण, खिली हुई हैं धूप ।48।

सपना बसंत आ गया, आया है मधुमास ।
पपिहा पी पी पल करे, पिया मिलन की आस ।49।

द्वारे टेसू खिल रहे, बिखरे रंग पलाश ।
कान्हा से मिलना हुआ, पूरी हुई तलाश ।50।

विनती कान्हा आपसे, सबका मंगल होय।
तेरी बरसे कब कृपा , जान सके न कोय।51।

माँ शारद का ध्यान कर, हाथ दुई लो जोड़।
सपना इनकी प्रेरणा, दिशा सभी दे मोड़।52।

सपना द्वेष करो नहीं, रखो प्रेम का भाव ।
आपस में मिलकर रहो, छोड़ सभी दुर्भाव ।53।

दुनिया में सच्चे अधिक, रिश्ते हैं अनमोल ।
मित्र लगाते हैं गले, बोल मधुर बस बोल ।54।

दरश दीजिए मोहना, मन मेरा बेचैन ।
सपना है द्वारे खड़ी, राह तक रहे नैन ।55।

मोर पपीहा बोलते, कोयल शब्द सुनाय ।
छा रही घनघोर घटा , हरि संदेशा लाय ।56।

मधुर मिलन धरती गगन, होता शुभ प्रभात ।
होय स्नेह संध्या मिलन, हो जाती फिर रात ।57।

मिट जाए अंतर तिमिर, बढ़े विश्व में ज्ञान ।
जाये जब सदबुद्धि मिल, मन से मिटे अज्ञान ।58।

परमात्मा तो मन बसे, आत्मा हुई निहाल ।
सपना है विनती करत , हम सभी नौनिहाल ।59।

सुख-दुख दो चरण है, चलते हैं अविराम ।
आस का साथ छूटता, साँस पूर्ण विराम ।60।

खुश होकर जीवन जियो, रहो नहिं परेशान।
सदकर्म करके सपना, अब बढ़ा लो मान ।61।

भ्रष्टाचार में मानव, डूबा है आकंठ ।
सदाचार करते नहीं, चाहते हैं बैकुंठ ।62।

कच्चे धागों बीच छुपा, भाई-बहन का प्यार ।
थाली लेकर शगुन की, बहना आयी द्वार ।63।

तिरंगा तीन रंग का, अपना है अभिमान ।
अशोक चक्र इसमे जड़ा, है भारत की शान ।64।

अविष्कार करते रहिए, करके नित प्रयोग ।
पूरे कर लो सपने, ले सबका सहयोग ।65।

कर अब ऐसा अनुष्ठान, सभी शिक्षित कहलाय ।
साक्षर देश- प्रदेश हो, जग उजियारा छाय ।66।

समानता की बात है, महिला का अधिकार।
ऐसा कुछ करो सपना, रहे ये बरकरार ।67।

पत्थरों पर पलाश खिले, दिखता है सब ठोस ।
खिलता देख मन अपना, सुबह दूब पर ओस ।68।

सरस्वती वर दायिनी, माता दे दो ज्ञान ।
निर्मल बुद्धि विवेक दे, माँ करिए कल्यान ।69।

सात सुरों की साधना, वाणी है अनमोल ।
कृति अनुपम संसार की, तेरे मीठे बोल ।70।

झंकृत वीणा मनस में, होत कंठ में वास ।
वंदनीय तुम मात हो, हरदम रहती पास ।71।

स्वर्गलोक की देवि तुम, देती नेक विचार ।
धड़कन स्पंदन तुम्ही, आशा का संचार ।72।

रास रचैया आपको, कहते हैं चितचोर।
प्रेम सहित अर्पित दही, खाओ नंद किशोर ।73।

मैया के तुम लाड़ले, पाते नंद दुलार।
हलधर के प्यारे बहुत, सपना करे पुकार ।74।

राह कर्म पथ की दिखा, ममता भरा दुलार ।
जले दीप की बातियाँ , जगा सकूँ संसार ।75।

आन वान वो शान दे, और शक्ति भंडार।
भाग्य रेख सपना वही , जो दे जीवन सार ।76।

माँ श्वेत वस्त्रधारणी, दो मुझको भी ज्ञान ।
अपना आशीर्वाद दो, मिले मुझे पहचान ।77।

कर्म करें अच्छे सभी, बढ़े देश की शान ।
सीमा पर सैनिक डटें, गाएं विजयी गान ।78।

मात भारती के लिये, देते हैं वो जान ।
भारत की संतान हम, बोलो सीना तान ।79।

पुकारती माँ भारती, आओ अब लें ठान ।
प्राण गवाँकर हम बढ़ें, बने देश का मान ।80।

परिवर्तन तो है नियम, मत करिए आवेश ।
समय बदलते ही यहाँ, बदले हैं परिवेश ।81।

सबको अपनी है पड़ी, सबकी अपनी सोच ।
मानव किसी की न सुने, लड़ा रहे सब चोंच ।82।

पनघट पर सखियाँ सभी, करती रही किलोल ।
छलकत जल से गागरी, बतिया है अनमोल ।83।

समय बिताता ही रहा, करता रहा तलाश ।
अहंकार के भाव ने, कर दिया सब विनाश ।84।

अलौकिक अनोखी छटा, वसंत का श्रृंगार ।
बाग में बहार सपना, भौरों का गुंजार ।85।

अधिकल्पना एक कल्पना, सबके मन में प्यार।
एकता में बँधे रहे, सुखी रहे संसार ।86।

जिम्मेदारी आप समझ, कर लो पूरे काज ।
सोचो सबका अब भला, करो दिलों पर राज ।87।

सिंहासन मत दीजिए, जो नहीं जिम्मेदार ।
धनार्जन लक्ष्य जिनका, असंयमित आचार ।88।

संवेदना बची रहे, रखिए इसका ध्यान।
पशु-पक्षी से प्रेम करें, बन जायें इंसान ।89।

सहनशीलता मन रखे, ये है गुण की खान ।
सपना अपनाकर इसे, पाते हैं हम मान ।90।

खूबसूरत हो मन जब, दिखता प्यारा संसार ।
सपना जियो खुशी- खुशी, पाकर सबका प्यार ।91।

नैतिकता का पाठ पढ़, दूर कर अंधियार।
सपना तमस दूर हटा, अंतस में उजियार ।92।

आशीर्वाद है उनको, करे जो नेक काम ।
कर्म करते हैं हरदम, छाया हो या घाम ।93।

सकारात्मक बने रहे, तभी सुफल हो काज ।
मन को मर्यादित रखें, तभी मिलेगा ताज ।94।

बेरोजगार मत रहे, करत रहे कुछ काज ।
काम ऐसो कीजिए, दुनिया को हो नाज ।95।

बड़ा सरल संसार है, करते रहना काम ।
तलाश तुझे है किसकी, मन में ही हैं राम ।96।

जलना है दीप बनकर, बनना ज्ञान प्रकाश ।
आलोकित करे पथ को, अपने हृदय तलाश ।97।

झर रही किरण से सुधा, शरद पूर्णिमा रात ।
शरद की रात मिलत है, ऊर्जा की सौगात ।98।

माँ की जो आते शरण, देकर उन्हें सम्मान ।
उनकी भक्ति तुम कर लो, पूरे हो अरमान ।99।

समसामयिक दिया विषय, दोहे लिखें जाय ।
शतक पूरा हो जिसका, शतकवीर कहलाय ।100।

****

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती अनिता मंदिलवार 'सपना'

जन्म - 04 फरवरी

शिक्षा - स्नातकोत्तर (वनस्पति शास्त्र, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य) बी.एड., पी.जी.डी.सी.ए.

पता

मो. - 9826519494

कार्यक्षेत्र - व्याख्याता पंचायत शास.हाई स्कूल, असोला, अंबिकापूर (सरगुजा) छ.ग.

विधा - गद्य एवं पद्य (कविता, ग़ज़ल, नाटक, रुपक, लेख, कहानी, हाइकु)

प्रकाशन
1. सांझा संकलन - हाइकु की सुगंध, काव्य अमृत, हिन्दी सागर पत्रिका, मातृभाषा, ग़ज़ल संग्रह-गुंजन, कथा संकलन-कथा सेतु, कलमकार, नारी काव्य सागर, रवीना-मेरी कविताएं विशेषांक, निभा- कविता कहानी महाविशेषांक, वूमन आवाज, संकलन-(सृजन समीक्षा) अंतरा शब्द शक्ति
2. नवभारत, दैनिक भास्कर, लोकमत, अंबिकावाणी समाचार पत्र में कविता एवं लेख।
3. स्वर मंजी, सत्य ज्ञान समागम, व्यंजना में कविताओं का प्रकाशन।

सम्मान
1. काव्य अमृत सम्मान 2. हिन्दी सागर सम्मान 3. दोहा शतकवीर सम्मान
4. हिन्दी साहित्य सेवी सम्मान 5. दोहा शतकवीर कलम की सुगंध सम्मान-2018।
6. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 7. अर्णव कलश एसोसिएशन द्वारा साहित्य के दमकते दीप साहित्यकार सम्मान - 2017। 8.साहित्य संगम संस्थान दिल्ली द्वारा हिन्दी वीरांगना सम्मान-2018। 9. साहित्य संगम संस्थान दिल्ली द्वारा श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान - 2018।
10. अर्णव कलश एसोसिएशन बाबू बालमुकुन्द गुप्त हिन्दी साहित्य सेवा सम्मान - 2017।
11. साहित्य संगम संस्थान द्वारा साहित्य गौरव सम्मान।
12. विश्व रचनाकार मंच द्वारा नारी काव्य सागर सम्मान।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

Women आवाज़
आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-37-7
मूल्य 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com